अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) पापों का मूल कारण है-

(क) हिंसा व अधर्म (ख) मोह व अज्ञान

(ग) मिथ्यात्व (घ) कषाय ( )

(b) अप्रदेशी द्रव्य है-

(क) धर्म (ख) अधर्म

(ग) आकाश (घ) काल ( )

(c) लौकान्तिक देव का भेद है-

(क) तुषित (ख) प्राणत

(ग) सुभद्र (घ) यशोधर ( )

(d) कायोत्सर्ग के आगार हैं-

(क) 13 (ख) 10

(ग) 12 (घ) 14 ( )

(e) अरूपी अजीव के भेद हैं-

(क) 30 (ख) 10

(ग) 530 (घ) 560 ( )

(f) कमठ तापस का जीव मरकर कौनसा देव हुआ-

(क) मेघमाली (ख) संगम

(ग) धरणेन्द्र (घ) किरणदेव ( )

(g) 'भींतादि का सहारा लेना' दोष है-

(क) आलस्य (ख) सावद्यक्रिया

(ग) कुआसन (घ) आलंबन ( )

(h) ''उड्डुएणं'' का अर्थ है-

(क) चक्कर आना (ख) डकार आना

(ग) जम्हाई आना (घ) अधोवायु निकलना ( )

(i) सामायिक कितने करण व योग से ली जाती है-

(क) 2 करण 3 योग (ख) 3 करण 2 योग

(ग) 2 करण 2 योग (घ) 2 करण 1 योग ( )

(j) रिट्ठा नरक का गोत्र है-

(क) पंक प्रभा (ख) तमःप्रभा

(ग) धूम प्रभा (घ) बालुका प्रभा ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) दर्शन पाँच होते हैं। ( )

(b) किसी भी जाति का व्यक्ति जैन साधु हो सकता है। ( )

(c) तिक्खुत्तो के पाठ में ''नमंसामि' शब्द नीचे बैठकर दोनों हाथ जोड़ते हुये बोलना चाहिए। ( )

(d) वन्दना एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है। ( )

(e) आलस्य समस्त पापों एवं अनर्थों का पोषक है। ( )

(f) यतना सम्यक्त्व की निर्मलता एवं चारित्र की निर्दोषता का कारण है। ( )

(g) सरोवर में आग लगाने वाला महापापी होता है। ( )

(h) उत्तरीकरण सूत्र से कायोत्सर्ग करने का संकल्प किया जाता है। ( )

(i) प्रभु पार्श्वनाथ का आठवाँ भव स्वर्णबाहु का था। ( )

(j) कायोत्सर्ग की काल मर्यादा 48 मिनट की है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	रस	(क) यतना	....
(b)	विश्वासघाती	(ख) मन का दोष	....
(c)	विवेक	(ग) सामायिक समापन सूत्र	....
(d)	अनुभाग	(घ) काया का दोष	....
(e)	भय	(च) ज्योतिषी देव	....
(f)	चलदृष्टि	(छ) 100 भेद	....
(g)	प्रणिपात	(ज) 115 भेद	....
(h)	अतिचार	(झ) बंध	....
(i)	सूर्य	(य) शक्रस्तव	....
(j)	नव तत्त्व	(र) महापापी	....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मेरा दूसरा नाम पुष्पदंत भी है। ....

(b) आध्यात्मिक साधना में मेरा पद सबसे ऊँचा है। ....

(c) मैं नागजाति के भवनवासी देवों में धरणेन्द्र नाम का इन्द्र हुआ। ....

(d) मैं सामायिक का एक ऐसा दोष हूँ, जो बिना उपयोग बोलने पर लगता हूँ। ....

(e) मैं महाराज नरवर्मा की पुत्री हूँ। ....

(f) मैं शिक्षा प्राप्ति में सबसे बाधक तत्त्व हूँ। ....

(g) मैं संख्यात, असंख्यात व अनन्त प्रदेशी द्रव्य हूँ। ....

(h) मैं नहीं तो धर्म नहीं। ....

(i) मैं शुभवचन बोलने से होता हूँ। ....

(j) मुझसे पाप का क्षय होता है। ....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - 12x2 = (24)

(a) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

पयासयरा .... लोगपईवाणं ....

ण किट्टियं .... उद्दविया ....

(b) मोटन एवं अबहुमान दोष का अर्थ लिखिए।

....

....

....

(c) ईरियावहिया के पाठ में कितने प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है व कौनसे ?

....

....

....

(d) रति एवं अरति का अर्थ लिखिए।

....

....

....

(e) मेघमाली देव ने कौन-कौन से तिर्यंचों का रूप धारण कर भगवान पार्श्वनाथ को कष्ट दिया ?

....

....

....

(f) 25 बोलों में से अंतिम बोल लिखिए।

....

....

....

(g) 22वाँ तथा 16वाँ भंग लिखिए।

....

....

....

(h) जीवन में यतना का महत्त्व सर्वोपरि क्यों है ?

....

....

....

(i) भगवान पार्श्वनाथ ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन कैसे किया ?

....

....

....

(j) देवों के दण्डक कितने व कौनसे हैं ?

....

....

....

(k) ज्ञान सीखने का पात्र कौन नहीं होता है ?

....

....

....

(l) प्रार्थना को पूर्ण करके लिखिए-

विषय ....

....

....कहो।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) 'णमोत्थुणं-पाठ का क्या प्रयोजन है ?

....

....

....

....

....

....

(b) आवर्तन देने की विधि को लौकिक उदाहरणों से समझाइए।

....

....

....

....

....

....

(c) भगवान पार्श्वनाथ को केवल ज्ञान की उपलब्धि कब, कहाँ और कैसे हुई ?

....

....

....

....

....

....

(d) दीवोत्ताणं.................मपुणराविति। उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।

....

....

....

....

....

....

(e) षट द्रव्यों को द्रव्य, क्षेत्र व गुण की अपेक्षा से लिखिए।

....

....

....

....

....

....

(f) निर्जरा तत्त्व के भेद लिखिए।

....

....

....

....

....

....

(g) लोगस्स का स्मरण, उत्कीर्तन और जाप करना हम सबका कर्त्तव्य क्यों है ?

....

....

....

....

....

....

(h) नवकार मंत्र में पहले अरिहंतों को नमस्कार किया गया, परन्तु णमोत्थुणं में पहले सिद्धों को नमस्कार क्यों किया गया ?

....

....

....

....

....

....

(i) श्रावक जी चौथे और सातवें व्रत में क्या करें ?

....

....

....

....

....

....

(j) **12 देवलोकों के नाम लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

(k) **अयतना से खड़े होने में क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?**

....

....

....

....

....

....

(l) **त्रिपृष्ट.......................डार। इस प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण करके लिखिए।**

....

....

....

....

....

....